साधना के पथ में त्याग का महत्त्व

साधना के मार्ग में त्याग का बहुत बड़ा महत्त्व है। त्याग से ही सर्वोच्च लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है। त्याग ही हमें आत्मिक सुख व संतोष प्रदान करता है। जिन्होंने त्याग के महत्त्व को समझ लिया तो वह आत्मा शक्तिशाली व संतोष रूपी सुख अपनी झोली में डाल देते हैं।

आत्मिक तेज त्याग के प्रकाश से ही चमकता है। जो मस्तक से प्रतिबिंबित होता है। तेज आत्मा की पवित्रता व रूहानियत का प्रतिबिंब है। इसे दिव्य बुद्धि से ही समझा जा सकता है। तेज महापुरुषों की महानता व योगियों की दिव्यता है। आत्म जागृति का तेज, आत्मा के परमात्मा की समीपता का लक्षण है।

त्याग क्या है?

त्याग योगियों के जीवन सरिता की वह धारा, जिसमें अनेक आत्माएं स्नान करके निखर उठती हैं। त्याग के समक्ष अनेक मस्तक एक साथ झुक जाते हैं। त्याग अध्यात्म जीवन की वह कड़ी है जो रूह को उसके बच्चे प्रियतम से मिलाती है। त्याग नहीं तो मस्तक पर तेज भी नहीं। त्याग अति सूक्ष्म धारणा है। जिसे गुह्यता से समझे बिना नहीं अपनाया जा सकता।

त्याग माना ही

उन चीज़ों को छोड़ देना जो हमारे लक्ष्य पूर्ति में बाधा बनती हैं। अतः जिन्हें अध्यात्म के मार्ग में सर्वोच्च लक्ष्य को पाने का दृढ़ संकल्प है, उन्हें अति सहज भाव से त्यागवृत्ति को अपना लेना चाहिए। त्याग के क्षेत्र में हमारा इतना सहज स्वरूप हो जो हमें भी आभास न हो कि हम कुछ त्याग कर रहे हैं या हमने ये त्याग किया। यह महसूसता त्याग के बाद होने वाले सूक्ष्म तनाव का कारण है जो कि त्याग के बल को कम कर देती है।

हमारे त्याग का अर्थ सन्यास नहीं है। सन्यास में तो सबकुछ छोड़कर किनारा कर लिया जाता है। फिर वहाँ त्याग की वास्तव में आवश्यकता ही नहीं रहती। परन्तु हमें सबकुछ छोड़कर सन्यास तो नहीं लेना है। लेकिन हमें उससे भी महान पथ को अपनाना है। फिर सब कुछ रखते हुए भी सम्पूर्ण त्याग वृत्ति हो। परन्तु श्रीमत अनुसार कदम उठाने से यह पथ सरल हो जाता है क्योंकि सन्यास के बाद पुनः मन का खिंचाव होना संभव है त्याग के बाद नहीं।

अतः त्याग की व्याख्या इस प्रकार की जानी चाहिए कि - 'हम मन में कुछ भी आसक्ति भाव से स्वीकार न करें।' संसार में रहते हुए हमें अनेक वैभव प्राप्त होते हैं। परन्तु हम उनका उपभोग करते हुए उनमें आसक्त न हों बल्कि उनसे निर्लिप्त रहें।

हमारा जीवन त्याग की चैतन्य मूर्ति हो

हमारे जीवन से व चेहरे से दूसरों को त्याग दिखलायी पड़े। हमें यह कहने की भी आवश्यकता न हो कि हमने त्याग किया। त्याग के बाद उन सब पदार्थों से हमारा मन पूर्णतया उपराम हो चुका हो, तब ही हम दूसरों को त्याग की मूर्ति दिखाई देंगे। आसक्ति व लगाव हमें छूने से डरता हो, वैभव हमें दूर से ही नमस्कार करते हो, हमारा मन पूर्णतया संतुष्ट हो गया हो, उसका झुकाव चारों ओर से समाप्त हो गया हो- यह है त्याग की चैतन्य मूर्त। ऐसी मूर्तियों के सामने संसार के सभी वैभवशाली प्राणी, वैभवों के नीरसता का अनुभव करेंगे, भौतिकता में रंगे प्राणी स्वयं को प्रकृति का गुलाम महसूस करेंगे और प्रकृति ऐसे त्यागमूर्त आत्माओं की पूर्ण सहयोगी होगी।

त्याग, साधकों की कसौटी है

हम राजयोगी हैं इसका यह अर्थ कदापि नहीं कि हम बाह्य शालीनता का दिखावा करें। त्याग ही हमारी शालीनता है। त्याग ही हमारी ईश्वरीय प्राप्ति का प्रतिबिंब है। हम श्रेष्ठ आत्माओं के लिए अब ईश्वरीय अनुभूतियों के अतिरिक्त कुछ भी ग्रहण करने योग्य नहीं हैं। त्यागवृत्ति से ही योग की सूक्ष्मताओं का आभास होता है व आत्मा दिव्य अनुभवों से ओत-प्रोत होती है।

अहम भाव का त्याग

अनेक प्रकार के त्याग में अहम् भाव का त्याग सर्वोपरि व अति सूक्ष्म है। कई मनुष्य सम्पूर्ण त्याग करने के बाद भी मन के अहम को नहीं मार पाते, फलस्वरूप उनका त्याग सम्पूर्ण फलदायक नहीं रह जाता। क्योंकि अहम भाव विष तुल्य है, जो त्याग रूपी अमृत में मिलकर उसे भी जहरीला बना देता है। अतः हमारा त्याग व महानता पूर्ण निर्मल व निरहंकारी होने में है। साधकों का अहंकार, मनुष्यों के मन में योग के प्रति श्रद्धा को नष्ट कर देता है। अतः योगियों का चित्त पूर्ण रूपेण निर्मल हो, ताकि उनके बोल दूसरों पर सुखों की वर्षा करें। इस प्रकार त्याग को अपने जीवन का अविनाशी अंग बनाकर सादगी से जीवन का श्रृंगार करके, जब हमारे मस्तक के दिव्य तेज अविरल गति से प्रवाहित होगा तो उसकी चमक सारे जग को चमकायेगी। उसकी चमक सभी आत्माओं को ईश्वर की ओर प्रेरित करेगी। उसकी चमक के समक्ष पूर्णमासी का चांद भी साधारण लगेगा। ऐसे दिव्य तेज को मस्तक पर धारण करके, अब हमें शीघ्र ही इस धरा पर आये हुए सम्पूर्ण तेजोमय परमपिता को प्रत्यक्ष करना है।

जिंतुर-महा.। आज़ादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत आरोग्य मेला में रूरल हॉस्पिटल के मेडिकल ऑफिसर डॉ. रवि किरण चांडगे, विधायक मेघना ताई बोर्डिकर, तालुका अध्यक्ष लक्ष्मण बुधवंत, पूर्व नगराध्यक्ष मुन्ना गोरे, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सुमन बहन आदि उपस्थित रहे।

रीवा-देवतालाब(म.प्र.)। पूर्व कैबिनेट मंत्री एवं वर्तमान विधायक राजेंद्र शुक्ल को ईश्वरीय संदेश देने एवं विश्व नव निर्माण प्रदर्शनी का अवलोकन कराने के पश्चात् साथ हैं स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. लता बहन।

छोटा उदेपुर-गुज.। शास्त्री बाग में गुजरात राज्य योग बोर्ड द्वारा आयोजित योग शिविर में योग बोर्ड के चेयरमैन शीशपाल भाई, योगाचार्य लक्ष्मण भाई जूनवानी, योग शिक्षक तुषार भाई पटेल, राजेश भाई पंचोली, घनश्याम भाई और उनकी टीम ने सभी को योगासन, व्यायाम, प्राणायाम आदि सिखाया एवं उनसे होने वाले फायदे भी बताए। इस मौके पर भाजपा के महामंत्री एवं पूर्व धारासभ्य प्रो. शंकर भाई राठवा, गुजरात माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक शिक्षण बोर्ड गांधीनगर के मेम्बर मुकेश भाई पटेल, डॉ. पारुल बहन, ब्र.कु. डॉ. मोनिका दीदी, नर्सिंग कॉलेज की प्रिंसिपल भावना बहन, कॉर्पोरेटर नेहा बहन, महिला मोर्चा की अध्यक्षा सज्जन बहन राजपूत तथा बड़ी संख्या में अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे। तत्पश्चात् ब्र.कु. डॉ. मोनिका दीदी ने आशा प्रतिष्ठा चैरिटेबल ट्रस्ट दिल्ली द्वारा प्राप्त 'लाइफ टाइम अचीवमेंट अवॉर्ड 2022' को शीशपाल जी के कर कमलों द्वारा प्राप्त किया।

रतलाम-डोंगरे नगर(म.प्र.)। मातृ दिवस के अवसर पर सभी माताओं का सम्मान करने के पश्चात् समूह चित्र में प्रदेश कार्य समिति सदस्य अनीता कटारिया, मुखर्जी मंडल अध्यक्ष चेतना पाटीदार, महिला मोर्चा जिला उपाध्यक्ष मीना टांक, ब्र.कु. सविता दीदी तथा अन्य।

इंदौर-रानी बाग(म.प्र.)। सिल्वर स्प्रिंग फेज़ 2 में आयोजित त्रिदिवसीय 'आंतरिक शांति एवं चिंता रहित जीवन शैली शिविर' में इंदौर ज़ोन की मुख्य क्षेत्रीय समन्वयक राजयोगिनी ब्र.कु. हेमलता दीदी, अर्गुटा इंटरनेशनल स्कूल इंदौर की डायरेक्टर अल्का दुबे, समाजसेवी बी.एल. पाटीदार, रिटायर्ड बैंक ऑफिसर अशोक व्यास, बिज़नेसमैन बृजेश जैन, इंदौर ज़ोन मेडिकल विंग की ज़ोनल कोऑर्डिनेटर ब्र.कु. उषा दीदी, ब्र.कु. सविता बहन, ब्र.कु. भुनेश्वरी बहन, ब्र.कु. रानी बहन, प्रो. हर्षा आकोटकर तथा अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।

रीवा-देवतालाब(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान के अंतर्गत आयोजित स्वच्छता, नशा मुक्ति एवं राजयोग के कार्यक्रम में म.प्र. विधानसभा के अध्यक्ष गिरीश गौतम ने अपने विचार रखे। इस अवसर पर स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. लता बहन, ब्र.कु. महेंद्र भाई सहित अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें उपस्थित रहे।

वर्धा-महा.। सात दिवसीय बाल व्यक्तित्व विकास शिविर के उद्घाटन समारोह में दीप प्रज्वलित करते हुए प्राध्यापिका अपर्णा बहन, शिक्षा क्रीड़ा और आरोग्य समिति के सभापति मृणाली माटे, ब्र.कु. माधुरी बहन, प्राध्यापक अजय भोयर, दक्ष फाउंडेशन वर्धा पुलिस मित्र के अध्यक्ष प्रकाश भाई खंडार तथा पालक प्रतिनिधि प्राध्यापक अजय चवरे।

ग्वालियर-माधौगंज(म.प्र.)। 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान व 'दया एवं करुणा के लिए आध्यात्मिक सशक्तिकरण' थीम के अंतर्गत युगल भाई-बहनों के लिए आयोजित चार दिवसीय 'राजयोग मेडिटेशन शिविर' के दौरान ब्र.कु. गीता बहन,सेवाकेन्द्र संचालिका,भीनमाल राज., ब्र.कु. आदर्श बहन,संचालिका,लश्कर ग्वालियर, ब्र.कु. ज्योति बहन, ब्र.कु. गुरचरण भाई, ब्र.कु. प्रहलाद भाई, ब्र.कु. जीतू भाई आदि उपस्थित रहे। पाँच सौ से अधिक भाई-बहनों ने इस शिविर में भाग लिया।

मुम्बई-गोराई(बोरीवली)। बच्चों के समर कैम्प के दौरान समूह चित्र में ब्र.कु. पारुल बहन, नालंदा कॉलेज के प्रिंसिपल अर्जुन बारी, होटल व्यवसायिक हरीश शेट्टी, नगरसेवक शिवाभाई शेट्टी तथा प्रतिभागी बच्चे।

दल्लीराजहरा-छ.ग.। आज़ादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत विश्व महिला दिवस के अवसर पर आयोजित स्नेह मिलन कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए नगर अध्यक्ष बहन एम. मसीहा, महिला कांग्रेस कमेटी उपाध्यक्ष बहन शिरोमणि माथुर, ब्र.कु. पूर्णिमा बहन तथा अन्य।